International Journal of Applied Research 2017; 3(12): 295-300

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(12): 295-300
www.allresearchjournal.com
Received: 15-10-2017
Accepted: 16-11-2017

Dr. K Jayalakshmi
Vellore Institute of Technology
Vellore, Tamil Nadu,
Department of Languages
Tamil Nadu, India

Correspondence
DR. K Jayalakshmi
Vellore Institute of Technology
Vellore, Tamil Nadu,
Department of Languages
Tamil Nadu, India

हिन्दी-अंग्रेज़ी काव्यानुवाद की समस्याएँ (रामचरितमानस का अनुवाद दी रामायण ऑफ तुलसीदास के विशेष संदर्भ में)

Dr. K Jayalakshmi

प्रस्तावना

हम जब किसी मनोहर रचना को पढ़ते या सुनते हैं तब हमारा मन उसकी ओर अपने आप खिंच जाता है । किसी मन भावनी उक्ति को बार बार सुनने या पढ़ने से मन थकता नहीं, प्रत्युत उसमें बार बार नया रस मिलता है। इस प्रकार की रचना, चाहे गद्य में हो चाहे पद्य में, सुनते या पढ़ते ही हृदय में ऐसा आनंद उत्पन्न करती है जो वर्णनातीत होता है। ऐसी कर्ण-सुखद, अर्थ-सौष्ठव से पूर्ण प्रभाव शाली व हृदय स्पर्शी शक्ति ही काव्य कहलाती है।

काव्य शब्द "कवि" शब्द से बना है। कवि हृदय में भावना का आवेग ही कविता का कारण होता है। इस आवेग की अनभूति से जब कवि का हृदय आतुर हो जाता है तब उसकी वाणी मचल उठती है। इसी बात को वोर्ड्सवोर्थ कविता को उत्कृष्ट भावनाओं का सहजोद्रेक मानते हैं। इसकी उत्पत्ति शान्ति में संचित्र अनुभूतियों से होती है।" [1] उत्कृष्ट भावनाओं का सहजोद्रेक क्षणिक होने के कारण अनुवाद में यह नष्ट हो जाता है।यह काव्यानुवाद की समस्या की ही ओर इशारा करता है।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से अनुवाद शब्द का यही अर्थ निकलता है- अनु+वद् (जो कहा जाता है उसे फिर से कहना) के अर्थ में "अनुवर्तिता' से "अनुवाद' शब्द निष्पन्न होता है। "अनुवाद' के प्रतिशब्द के रूप में अंग्रेजी में "ट्रांसलेशन' (Translation) शब्द मिलता है। "ट्रांस्लेशन" शब्द लौटिन के "ट्रांस' और "लेशन' के संयोग से बना है जिसका तात्पर्य है "पार ले जाना" । ट्रांस (Trans) = पार +, लेशन (lation) = ले जाना या नयन। इस प्रकार "ट्रांसलेशन' का अर्थ है : "एक भाषा से दूसरी भाषा में अंतरण की प्रक्रिया। "तात्पर्य यह है कि अनुवाद या ट्रांसलेशन करते समय मूल की बात का भाव ठीक तरह से अनुवाद पढ़ने वाले तक पहुँचे और बीच में वह अपना प्रभाव न खो बैठे। डॉ. भोलानाथ तिवारी इस प्रकार कहते हैं- "एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथा संभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है। [2]"

अनुवाद बहुभाषा-भाषी विश्व जनता के बीच एक सुदृढ सेतु का कार्य करता है।

रामचरितमानस की रचना अपनी विशिष्ट कथा एवं कलापक्ष के साथ साथ वैशिष्ट भाषिक चेतना के कारण विख्यात है । देश,काल, भाषा की सीमाएं लाँघकर देश विदेशी विद्वानों द्वारा रूपांतरित होते हुए यह विश्व साहित्य की कोटि में आ गया । 1954 में ए.जी. एटकिंस ने तुलसी कृत रामचरितमानस का दि रामायण ऑफ़ तुलसीदास शीर्षक का पहला पद्यानुवाद किया। एटकिंस ने जो काव्यानुवाद का प्रयास किया है वह अपने ढंग का अलग है और रामचरितमानस के काव्यानुवाद के क्षेत्र में पहला कहा जा सकता है ।

कविता का अनुवाद अन्य भाषा में करना कठिन काम है। इसमें शैली का अनुवाद कठिन है। शैली का महत्त्व जिस चीज में जितना अधिक होता है अनुवाद करना उतना ही कठिन है और यह कठिनाई तब उत्पन्न हो जाती है, जब किसी भाषा के विशेष हास्य, मुहावरों, विभिन्न अभिव्यक्तियों और पात्रों द्वारा प्रयुक्त विशेष संबोधनों को लक्ष्य भाषा में अनूदित करके प्रस्तुत करना होता है। पद्य में सौन्दर्य सृष्टि केलिए रचनाकार कभी-कभी पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करता है। पर्यायवाची शब्दों से भाषा-प्रवाह में निरन्तरता बनी रहती है। भाव विशेष की अभिव्यंजना में पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग "मानस' में हम देख सकते हैं। "रामचरितमानस' में प्राय: सभी पंक्तियों पर शब्दों के कुशल प्रयोग के दर्शन होते हैं। शैली की दृष्टि से यदि हिन्दी को स्रोत-भाषा मानकर अनुवाद की चर्चा करें तो पर्यायों की समस्या सबसे अधिक कठिन होगी क्योंकि हिन्दी में एक ही शब्द के कई पर्याय है।जैसे-

"अय मय खॉडन ऊख मय अजहँन बूझ अबूझ।"

अर्थात यह लोहे की बनी हुई खाँड (खाँड-खड्ग) है ऊख के रस की खॉड नहीं,जो मुँह में लेते ही गल जाय। प्रस्तुत उदाहरण में "खाँड' के दो अर्थ हैं एक "खड्ग' और दूसरा "ऊख का रस' । इस पंक्ति का अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"Rama broke the bow like sugar-cane, but the truth"

अंग्रेजी अनुवाद में "खाँड' को मात्र "ऊख' अर्थ में प्रयक्त किया गया है। इसका मात्र "sugar-cane' रख देने से मूल में अभिव्यक्त अर्थ लक्ष्य भाषा में पूर्ण रूप से उभर नहीं आया है।

तुलसी ने एक ही पंक्ति में "सीता' के कई पर्याय रखते हुए मूल पंक्ति में चार चाँद की सृष्टि की है-

"जनक सुता जग जननि जानकी। अति सय प्रिय करुनानिधान की।"

इसका अनुवाद है

"Fair Janki, daughter of Janak, world mother,
Belov'd by the storeshouse of grace as no other."

मूल पंक्ति में "जनकसुता', "जगजननि', "जानकी' सीता केलिए प्रयुक्त हुए हैं। मूल पंक्तियों में एक ही शब्द के कई पर्याय रख देने पर सौन्दर्य की जो सृष्टि हुई है वह लक्ष्य भाषा में उचित पर्याय न मिलने के कारण गायब हो गयी है। लक्ष्य भाषा में मूल में प्रयुक्त पर्यायों का शब्दानुवाद ही हुआ है। "जगजननि' केलिए "world mother' शब्द हास्यास्पद लगता है क्योंकि जग जननि का अर्थ "सृष्टि की जननी' काली या शक्ति है । मूल में जो अर्थ अभिव्यक्त होता है वह "world mother' में उभर नहीं आता।

इसका दूसरा उदाहरण है राम के सेतु निर्माण का समाचार मिलते ही रावण घबरा गया और इस घबराहट से उसके दसों मुख से सागर के दस पर्यायवाची शब्द निकल आए। इस का वर्णन करते हुए कवि लिखते हैं-

""बाँध्यो बन निधि नीर निधि जलधि सिंधु बारीस।
सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस।।"

इसका अनुवाद देखिए-

"Is it true he has bridged the great ocean, the lord of all rivers and streams flowing to it?
The treas'ry of waters, of floods, clouds and down falls !
The ocean bridged ! How could he do it?"

वननिधि, नीरनिधि, जलधि, सिंधु, वारीश, तोयनिधि, कंपति, उदाधि, पयोधि और नदीश सागर के पर्याय है। अनुवादक के पास एक ही शब्द के इतने पर्याय न होने के कारण इनका भावानुवाद किया है। अंग्रेजी में इस केलिए मात्र "ocean' शब्द का प्रयोग किया जाता है। मूल में "सागर' के इतने पर्यायों का वर्णन एक ही पंक्ति में करने से जो सौन्दर्य और प्रवाहात्मकता की सृष्टि हुई है वहीं लक्ष्य भाषा में भावानुवाद करने से नष्ट हो गई है।
कभी-कभी स्रोतभाषा में ऐसे ध्वनियों का भी प्रयोग होता है जो अलंकारों पर आधारित है और लक्ष्यभाषा में समान ध्वनिमूलक अलंकारों का मिलना और मूल जैसा प्रभाव रखना एक जटिल समस्या है। जैसे–

"खग कंक काक सृकाल। कट कटहिं कठिन कराल।।"

मूल पंक्ति में "क' वर्ण के कई बार प्रयोग करने के साथ-साथ "कटकटहिं' जैसे-ध्वनि मूलक शब्द के प्रयोग से सृजित सौन्दर्य पंक्तियों में आ गया है। उसे लक्ष्यभाषा में रूपान्तरित कर पाना कठिन है। इसका संकेत हमें उपर्युक्त मूल पंक्तियों के अनुवाद में मिलेगा-

"Countless crows jackals, vultures and kites
Snapped and snarled, taking huge, hungry bites".

अनुवादक लक्ष्य भाषा में मूल भाषा का सा सौन्दर्य किसी भी प्रकार से सृजित नहीं कर पाए।
इसी संदर्भ में शब्दशक्ति की समस्या भी प्रमुख रूप से अनुवादक के समाने खडी होती है। कभी-कभी किसी विशेष प्रसंग को अभिव्यक्त करने केलिए विशेष शब्द और अर्थ का प्रयोग किया जाता है। "बालकाण्ड' में राजा जनक की वाटिका में सीता के प्रथम दर्शन के बाद राम की मनोदशा को तुलसी यों व्यक्त करते हैं-

"भये बिलोचन चारु अचंचल। मनहु सकुचि निमित जेद्रिगंचल।।"

इस अंश का अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"His restless eyes gave up their wand'ring and blinking".
As tho' from the lids Nimi fled, god of 'winking".

मूल पाठ में "बिलोचन' शब्द में विशेष देखने वाले लोचन के जिस अतिरिक्त गुण की ओर संकेत है वह "eyes' द्वारा व्यक्त नहीं हो पाया है। दूसरी पंक्ति में तुलसी "निमितजेद्रिगंचल' द्वारा समय के जिस ठहराव की ओर संकेत करते हैं वह "Nimi fled, god of 'winking' द्वारा प्रकट नहीं हो सका। इधरअनुवादक ने निमि और "द्रिगंचल' शब्दों को ठीक तरह से नहीं समझा। मूल में "निमि' समय का प्रतीक है और न कि ईश्वर का रूप। निमि तजे "दिगंचल' का अर्थ है निमि राजा का वास सब की पलकों पर है। श्री सीताजी निमिकुल की कन्या हैं और श्रीराम उनके पति हैं। लडका-लडकी दोनों वाटिका में एकत्र हुए इसी से मानो राजा निमि सकुचा कर पलकों को छोड कर चले गये कि अब यहाँ रहना उचित नहीं। पलक छोडकर चले गए, इससे पलक खुले रह गए। इसका अभिप्राय यही है कि निमि यह सोचकर चले गए कि यहाँ हमारे रहने से इनको संकोच होगा जिसे इसके उपस्थित कार्य में विघ्न होगा। अपनी संतान का श्रृंगार कुतूहल देखना माना है। यह शाब्दिक अर्थ है और इसी शाब्दिक अर्थ का शब्दानुवाद अनुवादक ने किया है। इसका व्यंजित अर्थ है "समय निस्सीम होकर ठहर गया।' सीता सौदर्य के प्रथम दर्शन कर राम आँखों से उसे इतनी तन्मयता से देखने लगे कि उन्हें समय का ज्ञान नहीं रहा मानों समय ठहर गया हो। इस व्यंजित अर्थ तक एटकिन्स नहीं पहुँच सके।अत: मूल पंक्तियों में अभिव्यक्त अर्थ अनुवाद में आते-आते नष्ट हो गया है।
काव्य में अलंकार, छंद, रस, बिम्ब, प्रतीक आदि कई तत्त्व भी समाहित हैं जिससे काव्य में सौन्दर्य की सृष्टि होती है। काव्यानुवाद के संदर्भ में अनुवादक के समक्ष मात्र भाषा की समस्यायें नहीं होती बल्कि उपर्युक्त सारे तत्त्व भी चुनौती होते हैं। इसका एक उदाहरण देखिए-

"कबित रसिकन राम पदने हू। तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू।।"

इन पंक्तियों का अनुवाद एटकिन्स ने इस प्रकार किया-

"The poets who love not the Lord's feet sincerely
Will find in my verses the comical merely."

मूल पाठ के पहले अंश में "कबित रसिकन राम पदने हूमें "दीपकअलंकार' के प्रयोग से चमत्कार हुई है। दो पदों के बीच में प्रयुक्त कोई शब्द यदि दोनों पदों के अर्थ को प्रकाशित करे तो बीच के शब्द में दीपक अलंकार होता है। इधर "न' शब्द का संबंध मात्र दूसरे शब्द से नहीं है वरन पहले शब्द से भी है। अत: इन पंक्तियों का अर्थ निकलता है "जोन तो कविता के प्रेमी है और न जिनका रामचन्द्र के चरणों में प्रेम है। दीपकअलंकार से अपरिचय के कारण एटकिन्स ने "न' को बाद के पद में राम पद नेहू के साथ जोड दिया है। तुलसी के उक्त कथन में दीपक अलंकार को अंग्रेजी में रूपान्तरित नहीं किया जा सकता। इसलिए मूल चौपाई में जो चमत्कार है, वह अनुवाद में गायब हो गया।

शब्द प्रयोग से भी अलंकारों का निर्माण किया जाता है। इसमें भाव सौन्दर्य और चमत्कार शब्दों के प्रयोग पर निर्भर होता है। स्रोत भाषा में प्रयुक्त इन शब्दालंकार को लक्ष्य भाषा में ले आना अनुवादक केलिए अग्नि परीक्षा से कम नहीं है। मनुष्य अपने कथन की लयात्मकता केलिए अनुप्रास अलंकार का प्रयोग करता है। "मानस' में इसका भरपूर प्रयोग देखा जा सकता है।

"परन कुटी प्रिय प्रियतम संगा। प्रिय परिवारु कुरंग बिहंगा।।'

"With Rama, the grass hut was love's very station,
Each beast and each bird a beloved relation."

श्रीराम के साथ वन में रहने वाली सीता केलिए वहाँ की सभी चीजें सुखदायक लगती हैं।इस दृश्य को "प' व्यंजन की कई बार आवृत्ति से अनुप्रास द्वारा सुन्दर ढंग से मानसकार ने चित्रित किया है वह अनुवाद में आते ही खो गया है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि शब्दालंकार हो या अर्थालंकार दोनों की अभिव्यक्ति अनुवादक केलिए लक्ष्य भाषा में कर पाना कठिन ही नहीं वरन् असंभव भी है।

काव्य भाषा में सौन्दर्य एवं वण्र्य विषय में प्रभाव सृष्टि केलिए छंद अनिवार्य तत्त्व है। "मानस' में "दोहा चौपाई शैली का अनुपम प्रयोग किया है। इस काव्य में दोहा-चौपाई एवं सोरठा छंद का सुन्दर प्रयोग देखा जा सकता है। मूल में चित्रित इन छंदों को लक्ष्य भाषा में उतार पाना अनुवादक केलिए कठिन कार्य है। मानस में चित्रित एक दोहा और "दि रामायण ऑफ़ तुलसीदास' में इस दोहा की अभिव्यक्ति से इसका स्पष्ट संकेत मिलेगा। देखिए-

"जथा सुअंजन अंजिदृगसाधक सिद्ध सुजान।।
कौतुक देख हिंसौलबन भूतल भूरि निधान।।"

इस पंक्ति के मूल में विषम चरणों में 13-13 और समचरणों में 11-11 मात्राएँ हैं। कुल 24 मात्राएँ होने के कारण यह दोहा नाम का मात्रिक छंद है। इस दोहे का अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"Whoever this salve shall apply to his eyes,
Shall be thereby enlightened and cheered,
And enabled to look on the past times of Rama
In woods and hills where he appeared."

लक्ष्य भाषा में "दोहे' केलिए प्रयुक्त शब्द है "कॅपलेट' । लक्ष्य भाषा में पंक्तियों के चार चरण हैं जिससे यह कॅपलेट के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता। इससे यह स्पष्ट है कि मूल में अभिव्यक्त छंद का रूपांतरण करने में अनुवादक असमर्थ है।

काव्य में रस, अलंकार आदि की तरह सौदर्य बढाने वाला तत्त्व है प्रतीक।कम से कम शब्दों के द्वारा अधिक से अधिक भावों की अभिव्यंजना प्रस्तुत करने की शक्ति इसमें होती है। भिन्न देशों की संस्कृति, जलवायु आदि की भिन्नता के कारण देश-देश के प्रतीक भिन्न हैं। यही कारण है प्रतीकों का अनुवाद अनुवादक केलिए पेचीदा समस्या है।मानस में तुलसीदास ने कई प्रतीकों का प्रयोग किया है जो भारतीय संस्कृति और विश्वासों से जुडी हुई है।

"तेजड कामधेनु गृह त्यागी। खोजत आकु फिरहिं पय लागी।"

भारतीय संस्कृति में कामधेनु इच्छा पूर्ति की प्रतीक है। लेकिन मानसकार ने इस परंपरित प्रतीक को नए ढंग से प्रस्तुत किया है। यहाँ "कामधेनु को भक्ति का प्रतीक माना है। इस मूल पाठ का अनुवाद इस प्रकार किया गया है-

"Are like fools who in search of the milk weed will roam,
To get milk-leaving all their rich milch-cows at home."

अनुवादक ने "कामधेनु' केलिए "rich milch-cows' रख दिया है। यह अनूदित शब्द मूल में प्रयुक्त शब्द केलिए उचित नहीं है और न ही मूल अर्थ की अभिव्यक्ति कराती हैं। मूल शब्द से जो भाव पाठक के मन में जागृत होता है वह अनूदित शब्द में नष्ट हो गया है।प्रतीकों का अनुवाद करते समय अनुवादक को इन प्रतीकों के साथ जुडे सांस्कृतिक महत्त्व को समझना अत्यंत आवश्यक है।

भावों की अभिव्यक्ति ही रस को जन्म देता है। कवि के मन में जन्में भाव ही रस का रूप लेकर वाणी लेती है। रस के बिना अर्थ की प्रवृत्ति नहीं होती और इसी कारण रस काव्य का प्रधान अंग माना जाता है। "मानस' में मानसकार ने सभी रसों का प्रयोग किया है जिसका अनुवाद अनुवादक एक हद तक करने में सफल हुए हैं लेकिन मूल की सहजतापूर्ण रूप से उतार नहीं पाए हैं। कुछ उदाहरण देखिए-

"जौं तुम्हारि अनुसासन पावौं। कंदुक इव ब्रह्माण्ड उठावौं।
काचे घट जिमिडा रौं फोरी। सकऊँ मेरू मूलक जिमि तोरी।।"

जनक ने भरी सभा में रघुवंशी राम-लक्ष्मण के उपस्थित रहते हुए भी धरती को वीर विहीन कह दिया है उस पर लक्ष्मण ने जो अभिव्यक्ति की है उसमें अक्रोश का पुट लिए है। इस प्रसंग में यह कथन वीर रस का उत्तम उदाहरण है।इसका अनुवाद हुए हैं-

"If you will but give me your royal command,
I'll lift the whole world like a ball in one hand;
I 'll toss it and break it a mere earthen pot !
Mount Meru I'll wring like a herb from the spot."

जहाँ मूल में वीर रस का उल्लेख मिलता है वहीं अनुवाद में रौद्र रस की झलक ज्यादा दिखाई देती हैं। यहाँ दोनों भाषाओं के बीच जो अन्तर है यहीं प्रतिपादित होता है। अनूदित पंक्तियों में वीर रस को प्रस्तुत करने में अनुवादक सफल नहीं हुआ है।
चित्र को द्रवित करने की अपार शक्ति से समन्वित होने के कारण तथा अपने स्थाई भाव करुणा या संवेदना को सर्वापेक्षा व्यापकता के कारण इस रस का विशेष महत्त्व है। इस रस का स्थायी भाव शोक है।

"सोक बिबस कछु कह इन पारा। हृदय लगावत बार हि बारा।।"

यहाँ शोक विवश होने के कारण राजा कुछ कह नहीं सकते।वे बार बार श्रीरामचन्द्रजी को हृदय से लगाते । इसका अनुवाद देखिए-

"Not a word could he utter, but dumb in his grief
Clasped his son to his heart, sought but found no relief."

मानसकार ने जिस सहजता से "शोक' को स्थायी भाव के रूप में प्रस्तुत करते हुए राजा दशरथ के दु:ख को प्रस्तुत किया है वह अनूदित कृति में मात्र शब्दों का जाल है।"रस' के बिना काव्य नीरस प्रतीत होता है और इसी कारण अनुवादक को चाहिए की काव्य के (मूल) सौन्दर्य को बनाए रखते हुए अनुवाद को प्रस्तुत करे क्योंकि काव्य में व्यक्त सौंदर्य उसके शब्द के कारण ही नहीं अपितु उसमें व्यक्त भाव, रस, लय भी प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
बिंब काव्य में प्रयुक्त शब्द चित्र है। दूसरे शब्दों में बिंब काव्य भाषा की ऐसी शक्ति है जो मूर्त एवं विशिष्ट होती है । हिन्दी में यह शब्द अंग्रेजी के "इमेज' (Image) शब्द

के पर्याय के रूप में प्रचलित है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में अपने आस पास के जीवन के विविध उपकरणों से बिंबों को ग्रहण किया है। प्रकृति और प्राकृतिक दृश्यों का भी विशेष महत्त्व मानस में देखने को मिलता है। जैसे–

"चले मत्त गज जूथ घनेरे । प्राबिट जल दमरु तजनु प्रेरे।।"

इसका अनुवाद है-

"Roused elephant droves, in control hardly held,
Moved like great monsoon clouds by strong storm winds propelled."

मूल पाठ में आकाशीय बिंबों में मेघ तथा विद्युत बिम्बों को स्थान दिया गया है। वर्ष कालीन बादलों के विशाल आकार के बिंब "प्राबिट जल दमरु तजनु' में चित्रित किया गया है जो राक्षस सेना के गज समूह केलिए प्रयुक्त किया है। अनुवादक ने स्रोत भाषा का शब्दानुवाद प्रस्तुत किया है। बिंब का जो चित्रण मूल में बहुत सहजता से व्यक्त होता है वह अनूदित पंक्तियों में मात्र शब्दों का जाल प्रस्तुत करता है।

मानसकार ने प्राकृतिक उपकरणों के अलावा भारतीय संस्कृति के आधार पर भी बिंबों का प्रयोग किया है। भक्ति के कई रूप देखे जा सकते हैं। भारतीय संस्कृति में गुरु भक्ति का प्रमुख स्थान है। इस पर आधारित मानस में चित्रित एक उदाहरण देखिए-

"बंदउँ गुरुपद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महामोहतम पुंजजासु वचन रवि कर निकर।।"

हाँ पर गुरु वंदना के प्रसंग में जो बिंब विधान हुआ है, वह गुरु के प्रति आदर तथा सम्मान की व्यंजना करता है। इसका अनुवाद देखिए-

"My own master's feet I revere,
Sea of kindness, Lord vishnu in man's form below,
By whose words, Than the sun's rays more clear,
Error's night is dispersed, as night always must go."

मूल और अनुवाद की तुलना करते समय यह स्पष्टत: व्यक्त होता है कि अनवादक ने लक्ष्य भाषा में बिंबों का प्रयोग तो किया है लेकिन गुरु के आदर सूचित करने वाला बिंब है "नर रूप हरि' जो विष्णु अवतार का चित्रण कराता है। पाश्चात्य संस्कृति में ऐसा भाव नहीं है और इसी कारण अनुवाद करते समय बिंबों का प्रयोग बहुत ही निर्भिक प्रतीत होता है। बिंबों का अनुवाद करते समय मूल का अर्थ समझने केलिए जिसप्रकार भाव को नंगा करने की आवश्यकता होती है उसी प्रकार लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति केलिए उससे उचित जामा पहनाने की भी जरूरत होती है।

निष्कर्ष

काव्य ललित पदों से युक्त ऐसी विधा हैं जिसे पढकर या सुनकर पाठक या श्रोता के मन में आनन्द उत्पन्न होता है। वह अपने भावों को शब्द रूपी मोती में पिरोता है और अभिव्यंजित करता है । रस, अलंकार, ध्वनि आदि से इसे पुष्ट कर उसे काव्य में रूपायित करता है। इसी प्रतिभा को आत्मसात्कर भाव ग्रहण कर अनुवादक दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। काव्य का अनुवाद इसलिए बहुत दुष्कर है क्योंकि मूल की शैली को बनाए रखते हुए अनुवाद करना अनुवादक केलिए अग्निपरीक्षा है। "रामचरितमानस' के कलात्मक सौन्दर्य को एटकिन्स अपने अनुवाद में रूपान्तरित नहीं कर सके हैं। भारतीय संस्कृति और परंपरा से जुडे शब्द, प्रतीक और बिम्बों का शत-प्रतिशत अनुवाद नहीं हुआ है। मानस में प्रयुक्त अलंकार, रस, छंद, शब्द- शक्ति के अर्थाभिव्यक्ति में अनुवादक सफल हुए हैं पर मूल के सौन्दर्य की उद्भावना करने में वे असफल रहे हैं।

संदर्भ

1. Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings. It takes its origin from emotions recollected in tranquility. - William wordsworth; Poets on poetry- Lyrical Ballads, Preface, pg.154
2. भोलानाथ तिवारी : अनुवाद विज्ञान पृ॰ 15-16